EHJ-2-HI

क्या इतिहास का यीशु विश्वास का यीशु है? प्रोग्राम – 2

अनाऊंसर: ऐतिहासिक यीशु की खोज आज विख्यात और पढाई के संसार में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हो गया है, और इसने नैशनल मैगज़ीन से बहुत ध्यान आकर्षित किया, जैसे की टाइम, न्यूज़ वीक और यु एस न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट/ साथ ही मिडिया ने जीजस सेमीनार के इन वाक्यों कि बहुत ज्यादा महत्व दिया है, खुद को चुननेवाले लिबरल ग्रुप ने नए नियम की वुद्धिमत्ता को बहुत कम प्रतिशत दिए हैं/

आज हम ऐतिहासिक यीशु के विवादों पर आधारित सवालों के जवाब देंगे, और यीशु के बारे में बहुत ऐतिहासिक सच्चाई हैं ये बात दिखाएंगे, संसार के और नए नियम को छोड़ दूसरे स्रोतों से, जो ये दिखाते हैं कि इतिहास का यीशु मसीही विश्वास का ही यीशु है/

मेरे मेहमान हैं, संसार के महान फिलोसोफर डॉ. गैरी हैबरमास, ये द हिस्टोरिकल जीजस किताब के लेखक हैं, इन्होने म इशिग्न स्टेट यूनिवर्सिटी से पी एच डी की हैं, और दूसरी डॉक्टरेट डिग्री इम्मानुएल कॉलेज, ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लैंड से की हैं, डॉ. हैबरमास लिबर्टी यूनिवर्सिटी के फिलोसोफी और थियोलोजी के डिपार्टमेंट के चेअरमैन हैं, और इन्होने यीशु के जीवन पर 100 से भी ज्यादा लेख लिखे हैं, जो बहुत से बुद्धिमत्ता के जरनल में आएं हैं/

हमारे साथ द जॉन एन्करबर्ग शो के इस एडिशन में जुड़ जाए और और सीखे कि क्यों यीशु ऐतिहासिक समय में सबसे ज्यादा देखा जानेवाला व्यक्ति है/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्वागत है, आज मैं जाता हूँ कि आपको पता है कि जीजस सेमीनार के लिबरल विद्वान्, यीशु के बारे में पारंपरिक विश्वास पर हमला कर रहे हैं, वो कहते हैं कि ये मानना सही नही है कि यीशु परमेश्वर है, यीशु का पुनरुत्थान कभी नही हुआ, नए नियम की किताबें ऐतिहासिक यीशु के बारे में कोई सबूत नही देते हैं, लेकिन केवल शुरू के मसीही विश्वास के बारे में बताते हैं, लेकिन जीजस सेमिनार जो कहता है उसके विपरीत, ऐसी बहुतसी ऐतिहासिक जानकारी है, जो नए नियम के भीतर और बाहर है, जो अ\पारंपारिक मसीही विश्वास को साबित करती है, आज मेरी मेहमान हैं फिलोसोफर डॉ. गैरी हैबरमास, जो खुद दोष निकालनेवाले थे,लेकिन मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में पी एच डी पढ़ते हुए, उन्होंने जाना कि यीशु के बारे में मजबूत ऐतिहासिक सत्य है, जिसे वो अनदेखा नही कर सकते हैं/ मैं चाहता हूँ कि आप सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: पिछले हफ्ते के प्रोग्राम में हमने क्रीड के साहित्य के बारे में बताया जो पौलुस पहला कुरिन्थियो 15 में बताता है, ये तो शायद दिल है, मुख्य भाग है, ऐतिहासिक पौलुस के बारे में चर्चा करते हुए, अबश्य है ऐतिहासिक यीशु के बारे में बहुत सबूत हैं/

हमने जो कहा था वो इस तरह था, अगर हम 25 साल के समयकाल को देखे, क्रूस से शुरू करते हैं, सन 30 में, और वो पहला कुरिन्थियो सन 55 या 57 में लिख रहा था, याने यहाँ 25 साल हैं,पौलुस पहला कुरिन्थियो

15:1 और 2 में कहता है, जब मैं आया तब तुम्हें ये सुसमाचार सुनाया, याने सन 51 में, जिससे ये समय समयकाल 20 साल का हुआ,और फिर पहला कुरि 15:3 में सारांश बताता है, वो कहता है कि मैंने तुम्हें वो बात पहुंचा दी जो मुझे पहुंचाई गई थी, और खास बात है कि पौलुस इस साहित्य को यरूशलेम से जंचता है, पतरस के साथ, यीशु के भाई याकूब के साथ, गलातियों अध्याय 1 वचन 18 में, लगभग सन 35 में, याने ये तो क्रूस के 5 साल बाद, क्रूस फिर पौलुस यरूशलेम जाता है, फिर ये उसके पहले और किसी के पास था/

हम इस बहुत समय तक बात कर सकते हैं, लेकीन पिछले हफ्ते के सवाल से एक महत्वपूर्ण बात, हम कैसे जानेंगे कि पौलुस मसीही को शुरू करनेवाला नही है? पौलुस सबसे महत्वपूर्ण समय ये कहता है, पहला कुरिन्थियो 15:3 कहता है, ये सबसे पहले पहुंचा दी, वो कहता है कि मेरी घोषणा का केन्द्र है, फिर वो कहता है कि ये मेरी ओर से नही आया, सबसे पहला महत्व देता है, मेरी घोषणा का केन्द्र है, मैंने तुम्हें वो दिया जो मैंने पाया है, यदि उसने पतरस और याकूब से इसे यरूशलेम से पाया था, तो अब ये पौलुस का साहित्य नही था, लेकिन ये दो महत्वपूर्ण घोषणा करनेवालों से आया है/ शुरू के चर्च से, पतरस और यीशु के भाई याकूब से/

अब, पौलुस जो कहता है क्या वो सही है? सच्चाई के साथ देखते हैं, जब हम पहला कुरिन्थियो 15:3 को देखते हैं,तो पाते हैं कि ये मिलता है, यदि कोई निश्कर्ष निकाले, जो नए नियम के विद्वानों ने मानी हैं, वो ये है, कि क्रीड के वाक्य,ये परंपरा जो पौलुस दे रहा था, या अंगीकार कह सकते हैं, जो पौलुस बता रहा है, ये जांचना, पौलुस कहता है कि उसने ये किसी से पाया, ये वचन 3 से शुरू होता है, और आगे बढ़ता है, कुछ सोचते हैं वचन 5 तक तो कुछ सोचते हैं वचन 7 तक/

लेकिन बात तो ये है, ऐसी बहुतसी बातें दिखाती है कि ये पौलुस ने घोषणा नही की, बहुतसी बातें दिखाती है कि उसने सच में क्या कहा, इसीलिए पौलुस खुद इसे बताता हैं, उसने ये और किसी से पाया था, ये कैसे जानते हैं? यहाँ पौलुस ने नही लिखे हुए शब्द हैं, पौलुस ने कभी नही कहा कि तीसरे दिन, ये उसकी घोषणा है और ये उसने की है, लेकिन उसी घोषणा नही कि ये खुद उसने बनाई हो/ वो परंपरा बढ़ा रहा है, पौलुस ने नही लिखे शब्द हैं, पतरस को कैफा कहा गया है, और जोकिम जरमियास, नए नियम के एक जर्मन विद्वान ने बहस की, कि शायद ये असली अरेमिक से आया है, इसका अर्थ है कि ये सच में पौलुस के पहले लिखा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब जीजस सेमिनार में कुछ विद्वान्, ये दावा करते हैं कि प्रेरित पौलुस ने ही विश्वास के यीशु की खोज की, उनका ये कहता है कि पौलुस ने ये कहानी बनाई कि यीशु ही परमेश्वर है, और उसके पहले ये कभी नही कहा गया था, लेकिन डॉ. हैबरमास ऐतिहासिक सच्चाई बताते हैं, जो स्पष्ट बताते हैं कि पौलुस ने मसीहियत की खोज नही की, या मसीही विशवास के मसीहा की/ सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब पौलुस ने कुछ महत्वपूर्ण बातें कही हैं, उसने कहा, मैं तुम्हें पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, और मुझे ये शब्द पसंद है, सबसे पहले पहुंचा दी, पौलुस कहता है कि ये सबसे बुनियादी महत्वपूर्ण बात थी जो मुझे तुम्हें बताना था, पहले 2 वचन में कहता है कि यदि स्वीकारी किया तो उद्धार पाया, यदि नही तो नही पाया, याने हम यहाँ केन्द्र में हैं/

फिर वो कहता है कि ये मेरा नही है, याने पौलुस ने खोज नही की, अब क्या हम ये देखते हैं, क्या ये वचन सबूत देते हैं, कि पौलुस इसे दे रहा था, उसे ये किसी से मिला था, दूसरे शब्दों में पौलुस उसे दोहराता है लेकिन ये उसका साहित्य नही है/ यहाँ इस वचन में हम बहुत से दर्शानेवाली बातें देखते हैं,कि ये पौलुस से नही आया था/

उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा, और वो गाढ़ा गया, पौलुस फिर कभी इस शब्द का उपयोग नही करता, और वो कभी भी सुसमाचार के बारे में बताते हुए, ये नही कहता जैसे पिछले हफ्ते कहा था, मसीह का ईश्वरत्व, उसकी मृत्यु, और पुनरुत्थान, वो कभी गाढ़ा जाना नही कहता/ याने ये पौलुस के शब्द नही हैं/

एक और बात, पतरस का नाम कैफा है, अब पौलुस पतरस को कैफा भी कहता है, लेकिन पतरस को पतरस के नाम से जाना जाता था, और जरमियास नए नियम के एक जर्मन विद्वान कहते हैं कि ये एक बार दर्शाता है, ये असली अरेमिक भाषा में आया होगा/

पिन्कस लिपिड, ये कन्सरवेटिव यहूदी नए नियम के विद्वान हैं, इन्होने कहा, कि यहाँ कुछ और चिन्ह हैं कि ये परंपरा को देते जा रहे हैं/

उदाहरण के लिए जिसे ट्रिपल होटी क्लोज कहते हैं, इंग्लिश विद्यार्थी उसे जानते हैं, याने और, और, और, पौलुस इस बात को खत्म नही करता जब तक ये बड़ा वाक्य खत्म न करे, पवित्रशास्त्र के अनुसार पापों के लिए मरा, और वो गाढ़ा गया और वो जी उठा,और वो प्रकट हुआ, और डॉ. लिपिड हमें बताते हैं, ये हिब्रू नैरेशन का तरीका है/

ये शब्द पहुंची और पहुंचा दी, परंपरा देते जाने के टेक्निकल शब्द हैं, पौलुस पहला कुरिन्थियो 11 में फिर कहता है, प्रभु भोज के बारे में, मुझे पहुंची और पहुंचा दी, याने ये तो 3 या 4 दर्शानेवाली बातें हैं, कि ये पौलुस से नही आया/

अब हम कैसे जानेंगे इस क्रीड या परंपरा को, विद्वान् कहते हैं कि इसे दो अच्छे कॉलम में पढ़ सकते हैं, और ये इंग्लिश कविता नही, जो रायम जैसे होती हैं, लेकिन ये पढ़ा जाता है, पहली सदी के यहूदी लोगों के सामने, जहाँ ये क्रम में है, और आप देख सकते हैं, कि जब वो प्रकट हुआ, यीशु व्यक्तिगत रूप में प्रकट हुआ,पतरस पर, और समूह पर, बारहों पर, और फिर एक साथ 500 लोगों पर, फिर याकूब पर प्रकट हुआ, एक और व्यक्ति, वो समूह के सामने प्रकट हुआ, देखिए इस में क्रम है, और ये जांचने के क्रम में रखा गया है/

मैंने पिछले हफ्ते ये कहा था, शायद 90 प्रतिशत पैलिस्टीनी या यहूदी लोगों को पढना नही आता था, पढ़े-लिखे नही थे, तो अपने संदेश का मुख्य भाग कैसे दे, पहला महत्व उन लोगों के लिए जो नही पढ़ते हैं, हम इसे इस तरह से कह सकते हैं कि वो याद कर लें और इसे दोहराते जाएं, इन क्रीड के वचन का यही काम था, और हम यहाँ देखते हैं कि पौलुस अपने दिल का संदेश दे रहा है, कि जब आया तब मैंने प्रचार किया, वो कहता है दोस्तों ये तो मेरा नही है/

मैं सोचता हूँ कि हमें यहाँ बहुतसी बातों को फिर से देखना होगा, इस शुरू के संदेश का महत्व, हमारे पास डेटा है, समयकाल है, जो सन 30 तक यीशु तक जाता है, ये पौलुस से नही है, याने पौलुस नए नियम का संदेश शुरू करनेवाला नही है/

पहला कुरिन्थियो 15:11, फिर से, हमने इसे पिछले हफ्ते देखा था, पौलुस कहता है, चाहे मैं हूँ, चाहे वो हो, हम यही प्रचार करते हैं और इस पर तुमने विश्वास भी किया/ यहाँ हम जो हैं वो प्रेरित हैं, वो कहता है उनसे सुनो, या मुझ से सुनो, हम वही संदेश प्रचार करते हैं, किस बारे में, सुसमाचार और सामान्य रूप में जी उठने का प्रकटीकरण/

पौलुस यही कहता है, मैंने इसे नही बनाया, मैंने ये और किसी से पाया, मैंने जो पाया है वो तुम्हें भी दे देता हूँ, अब वचन 11 देखिए, चाहे मैं हूँ, चाहे वो हो, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास भी किया, सोचता हूँ कि पौलुस ये कह रहा था कि चेलों से पूछो, मैं जो बता रहा हूँ वो भी वही बताएंगे/ मुझ से पूछो, मैं तुम्हें बताऊंगा/

अब ये संदेश क्या है, पिछले वचनों को देखिए, ये सुसमाचार है और खासकर, वो यहाँ प्रकट होने के बारे में कह रहा है, वो कहता है मैंने उनसे बातें की हैं, उनके पास वही संदेश है मेरे पास है, उन्होंने मुझ से बातें की हैं, उन्होंने मुझे आज्ञा दी हैं, चलिए गलातियों 2 से देखते हैं/

इसी लिए हम इतिहास के बहुत विशेष समय में हैं, हमें आगे बढकर वो देखना है जो पौलुस देख रहा था, और उसके संदेश को इतिहास के समयकाल के साथ जोडकर देखना है/ पत्रों के वचन और वो अच्छा संदेश देता है, हमारे पास समयकाल है और दोस्तों, ये इवेंजलिक्ल नही कि समयकाल में आ गया, ये तो बना है बहुत ही मुश्किल और नॉन-इवेंजलिक्ल थियोलोजी पर, मैं सोचता हूँ कि इन तरीकों का उपयोग करते हुए, हम यहाँ बहुत बुनियादी बातें देखते हैं, जो हमारे विश्वास का दिल है, यीशु मसीह का मारा जाना, गाढ़ा जाना और जी उठना/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: यदि आप विद्यार्थी हैं, तो स्कुल में कितनी बार आपने सूना होगा, कि नए नियम का साहित्य कुछ नही बस लेजिंड है या मनघडत है/ फिर से ये सही नही है, डॉ. हैबरमास 3 कारण देते हैं, कि क्यों विद्वान विश्वास करते हैं, कि वो यीशु के जीवन के बारे में मजबूत सटीक सबूतों से व्यवहार कर रहे हैं, सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब, मैं सोचता हूँ कि हमें थोडा पीछे जाकर देखना होगा, कि पहला कुरिन्थियो 15 का ये अध्याय किस बारे में हैं, यदि पौलुस ने हमें सन 35 का साहित्य दिया है, यरूशलेम की यात्रा से, गलातियों 1:18 से, जहाँ वो पतरस और यीशु के भाई याकूब से मिलता है, तो हमारे पास बहुत शुरू के समय से काफी साहित्य मिला है, जो 2 महत्वपूर्ण सच्चाई के बारे में बताते हैं/

नबंर एक, ये सहित्य शुरू से है, और ऐसे ही नही मिलते जब तक दूसरे ग्रीको-रोमन साहित्य को न देखे, मतलब लिवी रिपोर्ट कहती है, कि इस समय के पहले सैकड़ों साल पहले, और पौलुस ऐसा कुछ कहता है जिसमे वो जुड़ा था, इस घटना के 5 साल बाद, और उसके पहले दूसरे लोग भी जुड़े थे, मतलब, यहाँ इस दुरी को कम करते जा रहे हैं/

दूसरी बात हमारे पास आँखों देखे गवाहों का लेख है, आँखों देखे गवाहों को परखने का ये तरीका है, हमने सुसमाचार के बारे में कहा और वो एक संभावन है, लेकिन पौलुस की बात को देखना तो सच में वो लेना है जो उसने हमें दिया है, जो परंपरा हमें देती है और पौलुस खुद आँखों देखा गवाह था, हम इसे अनदेखा नही कर सकते हैं, पौलुस कहता है कि मैं जी उठे यीशु से मिला/

लेकिन पतरस भी साथ है, यीशु का भाई याकूब भी है, खैर पहला कुरिन्थियो में पौलुस की सूचि में इन दोनों का नाम है, ये एक और संबन्ध है गलातियों 1 और पहला कुरिन्थियो 15 में, याने हम उन लोगों को देख रहे हैं जो वहां थे, और मैं सोचता हूँ कि पौलुस पतरस से बातें करने में दिलचस्पी ले रहा है/ कि वो क्या कहना चाहता है/

अब इस सवाल में चले क्या पौलुस ने खुद इसे बनाया? मैं कहूँगा कि नही, क्योंकि ये पहले महत्व की बात थी और किसी से पाई थी/

एक और तरीका है कि इस पुरे चित्र को देखे और वही करें, तो प्रेरितों में शुरू के क्रीड के वचनों को देखिए, यदि आप इवेंजलिक्ल से पूछे कि नए नियम के पहले शुरू में प्रचार किस तरह होता था? तो कहेंगे, सरल हैं प्रेरितों को पढिए/ दोष निकालनेवाले कहते हैं प्रेरित 1 से 5पढिए

अब जवाब समान सुने देता है लेकिन कारण अलग हैं, इवेंजलिक्ल कहते हैं कि वो पुरे वचन पर विश्वास करते हैं, दोष निकालनेवाले प्रेरितों के काम में ये शुरू के अंगीकार और क्रीड के वचनों को देखते हैं, एक कारण है कि मैंने इसे देखा है, इस तरह से कि ये क्रीड है/ कि वो विश्वास करते हैं कि छोटा और छोटा, बिना उलझी हुई, ये थियोलोजी होगी, तो उतनी सच्ची होगी, तो प्रेरितों के काम में कई जगह पतरस कहता है, आप कल्पना कर सकते हैं कि वो यहूदी अगुवों की ओर ऊँगली उठता है, तुमने उसे मारा, परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाया/

देखिए ये छोटी बातें हैं जिसमे सुसमाचार मिलता है, ठीक है, प्रभु यीशु के बारे में कहता है, वो केवल मनुष्य नही है, तुमने उसे मारा, परमेश्वर ने उसे जिलाया, यहाँ सुसमाचार है, पतरस आता और जाता है, और इसे याद रखना आसन है/

तो वो मनुष्य नही परमेश्वर ही होगा, ये सुसमाचार है लेकिन साथ में और भी कुछ कह रहा है, और ये प्रेरित 1 से 5 में है, प्रेरित 10 में, पतरस करनीलयुस को प्रचार करता है, ये सब क्रम में है, प्रेरित 1 से 5, प्रेरित 10, और प्रेरित 13 में,पौलुस के संदेश में कुछ विद्वान् मानते हैं कि यहाँ क्रीड के वाक्य हैं, अगर आप देखे तो बताऊ आपको या मिलेगा, सुसमाचार के हर एक भाग में, आप मसीह का ईश्वरत्व देखते हैं, उसकी मृत्यु, उसका जी उठना/

अनुमान लगाइए कि कोई नही कहेगा कि पौलुस इसे बनानेवाला है/ याने यहाँ शुरू के प्रचार की बात आती है,पौलुस अब सामने नही आया था, प्रेरित अध्याय 9 तक, यहाँ पर 5 अध्याय का साहित्य है, वो भी वही बात करते हैं, वहां पौलुस नही है/ और फिर भी हम प्रेरितों जाकर कह सकते हैं, कि ये सबसे पहला महत्व है, कि यीशु मरा, और वो जिलाया गया, और यीशु होने से बढकर वो प्रभु है, मसीहा है/ ये दो सबसे विख्यात शीर्षक हैं/

याने प्रेरितों के दृष्टिकोण से, आप क्रीड देखते हैं, आप देखते हैं कि ये बिना उलझा हुआ, छोटा, सटीक और माना हुआ थियोलोजीकल वाक्य, याने सुसमाचार देखते हैं, हम सुसमाचार कहते हैं और पौलुस वहां नही है, याने ये अलग दृष्टिकोण है, जिसे हम मुख्य सिद्धान्त कहते हैं, ये मसीही विश्वास का केन्द्र है, और वो है सुसमाचार, उद्धार/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब हर मसीही विद्वार्थिययों को ध्यान से देखना होगा कि कैसे डॉ. हैबरमास बहस करते हैं, विश्वासी के नाते हम सब नए नियम की किताबों को आधिकारिक और सच्ची मानते हैं, लेकिन आपके अविश्वासी प्रोफेसर और दोस्त नही मानते, तो उनसे बातें करने में हमें कौनसे सबूतों का उपयोग करना चाहिए? यदि आपके दोस्त और प्रोफेसर आधुनिक विद्वान् को मानते हैं, वो जानते हैं कि पौलुस के लेख के कुछ भाग, और 4 सुसमाचार का भाग स्वीकार किया गया है, केवल प्रेरणा नही लेकिन ये ऐतिहासिक और भरोसेमंद जानकारी है/ वो इसे स्वीकार करते हैं तो इस साधन का उपयोग करें, ये ऐतिहासिक बात प्रकट करता है कि यीशु जीवित था, परमेश्वर होने का दावा किया, क्रूस पर मरा, कब्र में गाढ़ा गया, और बाद में अपने चेलों पर प्रकट हुआ, ये ऐतिहासिक सबूत हैं जिसे अनदेखा नही कर सकते हैं, अब यदि आप पूछे कि उनमे से कुछ वचन कौनसे हैं, जिसे सब दोष निकालनेवाले विद्वान् स्वीकार करते हैं, वो हमें ये बातें बताते हैं, डॉ. हैबरमास बताते हैं तो सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब हम पिछले द्वार से गए हैं, हमने उस डेटा से शुरू किया जो सबसे मजबूत है, पहला कुरिन्थियो 15, पौलुस की लिखी पत्री जिस पर विवाद नही, और फिर हम पीछे गए और देखा, पौलुस की दृष्टी से पतरस और याकूब को देखा, गलातियों 1 से हमने कुछ पुरानी बातें सुसमाचार के बारे में देखी/ प्रेरितों में भी, अब ये कहने के बाद, तो क्यों दोष निकालनेवाले लोग कहते हैं कि सुसमाचार का कोई मोल नही है, जब मैं दोष निकालनेवाले कहता हूँ तो बहुत से हैं, आधुनिक समाज, जिसमे सबसे प्रभावी विद्वान् हैं, जो आधी बातों पर बहस नही करेंगे, उन पुरे लोगों में से जो मुख्य धारा के कहते जाते हैं/

अब जब आप सुसमाचार में जाते हैं तो क्या आप यही संदेश सुनते हैं या नही सुनते? इसे बताते हूँ एक बात कहता हूँ, पहला कुरिन्थियो सुसमाचार के पहले बताता है, कम से कम पहला कुरिन्थियो 15 चार सुसमाचार के पहले के समय के बारे में बताता है, याने सच में सुसमाचार थोड़े समय बाद आते हैं, लेकिन यहाँ हमने घोड़े को

सही जगह पर रखा है, गाडी के आगे, यदि आप पौलुस को पहले ही समझ गए, और फिर बाद में प्रेरितों में देखते हैं,तो इन किताबों पर सवाल क्यों हैं, जो हमने पौलुस में शुरू के स्रोतों से पाई हैं/

यदि आप यीशु के बारे में देखे तो आप सुसमाचार में यही पाएंगे, बिलकुल यही घोषणा है, मतलब पौलुस सामान्य विश्वासियों से नही मिलता, ऐसे लोग जो यीशु को नही जानते थे, उसने पतरस से बातें की, उसने याकूब से बातें की, वो अगले अध्याय में यरूशलेम वापस आता है, यही दो लोग वहां हैं पतरस और याकूब, और युहन्ना वहां है, प्रेरित युहन्ना वहां है, याने पौलुस का संपर्क है/

जब वो खुद यीशु को देखता है, सुसमाचार में, तो हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने यीशु का ईश्वरत्व नही बनाया, आप देखते हैं कि शुरू के छोटे क्रीड में ये शीर्षक प्रेरितों में बताए गए हैं, लेकिन इन्हें सुसमाचार में भी देखते हैं, मैं सोचता हूँ कि हमारी दो सबसे अच्छी बुनियाद, मसीह के ईश्वरत्व के बारे में कहने के लिए, सुसमाचार में यीशु ने खुद ये कहा है, मनुष्य का पुत्र और परमेश्वर का पुत्र,अब परमेश्वर का पुत्र, तो सामान्य रूप में ईश्वरत्व का शीर्षक माना जाता है/ मनुष्य का पुत्र, खैर बहुत से लोग इसे नही जानते हैं, ये शीर्षक नही कि मरियम का पुत्र है, मनुष्य के पुत्र का अर्थ मनुष्य नही है, मनुष्य का पुत्र याने बहुत से ज्ञान की बातों को संक्षिप्त में कहे तो, यीशु बताता है कि वो डेनियल 7:13 और 14 के वचन को वो जानता है, जहाँ दानिएल उपर देखता है, उस महान प्राचीन को, जो निचे आता है और मनुष्य के पुत्र सा दिखाई देता है, और यीशु के समय में ये विचार बहुत ज्यादा था, उस समय की कुछ यहूदी किताबों में ये आया है, जिनका वचन से कोई संबन्ध नही है/

लेकिन उनके पढने वाले जानते थे कि मनुष्य का पुत्र सामान्य मनुष्य हो सकता है, भविष्यवक्ता हो सकता है, यहेजकेल की किताब के अनुसार, या मनुष्य का पुत्र हो सकता है, जो उस महान प्राचीन से निचे आता है, ये भविष्यवाणी का व्यक्ति, जो ईश्वरीय व्यक्ति है, परमेश्वर का राज्य स्थापित करता है, जिसके बारे में यीशु ने कहा कि वो यही है, मनुष्य का पुत्र सुसमाचार में यीशु ने खुद के बारे में दिया पसन्दीदा विवरण है/ कम से कम दो बार है, एक बार मरकुस 14 में, वो दानिएल 7:13 और 14 कहता है, और कहता है कि वो मैं हूँ/ उस समय जब यहूदी याजकों ने कहा, क्या तू मसीह हैं, उस परमधन्य का पुत्र, देखिए यीशु से क्या पूछा गया, क्या तू मसीहा है, परमेश्वर का पुत्र, यीशु ने कहा एगो एमी, मैं हूँ, फिर वो बदलकर कहता है मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर के पुत्र पर सवाल था और जवाब मनुष्य पुत्र के रूप में दिया, उसने कहा मैं मसीहा हूँ, परमेश्वर का पुत्र, और तुम मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग के बादलों पर आते हुए देखोगे, न्याय करने के लिए और याजक घोषणा करने के लिए कहता है, ये निन्दा है और कपड़े फाड़ता है, कहा बाकि गवाह घर जा सकते हैं, हमने इसे पकड़ लिया/

अब, ये किस कारण हुआ? मरकुस 14 के इस वचन में, यीशु ने कहा एगो इमी, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ, और फिर कहता है कि तुम मनुष्य के पुत्र को, बादलों पर आते देखोगे, ये कोट करता है दानिएल 7:13 और 14 से, वो दावा करता है कि पहले से अस्तित्व में है, जो महान प्राचीन से आता है कि परमेश्वर के राज्य को स्थापित करे, दूसरी बात वो ये वाक्य कहता है कि बादलों पर आएगा, ये वाक्य वचनों में कईबार उपयोग किया गया है, ईश्वरत्व के संबन्ध में, और यीशु ने कहा वो मैं हूँ, उसने कहा था एगो इमी, मनुष्य के पुत्र के बारे में, और याजक तो मानों इसकी राह देख रहे थे, उसने कहा अच्छा है, हमने इसे पकड़ लिया/ बाकि लोग घर चले जाओ/

याने यदि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है, और यीशु ने मनुष्य का पुत्र होने का दावा किया है, तो हम क्यों सोचते हैं कि पौलुस ने बाद में यीशु के ईश्वरत्व की खोज की? हमने ये सुसमाचार में देखा और प्रेरितों के काम में सुसमाचार के छोटे वाक्यों में देखा, पहला कुरिन्थियो 15 देखा, मैं सोचता हूँ कि मसीह के ईश्वरत्व के लिए ये मजबूत केस है, ये न भूले कि यदि मसीह मुर्दों में से जी उठा है, तो अब ये सवाल पूछना चाहिए, कि क्या परमेश्वर कुछ कह रहा है, पारंपरिक मसीहियत नए नियम में कहती है, कि परमेश्वर ने जिलाया और यीशु ने उसके संदेश को साबित किया, और यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया है, तो ये परमेश्वर की निन्दा नही है, याने पुनरुत्थान तो यीशु के बारे में परमेश्वर की सहमती की मुहर थी, हम ये देखते

हैं, प्रेरित 2 में, पतरस इस तरह प्रेरित 17 में बहस करता है, पौलुस इस तरह रोमियों 1 में बहस करता है/ पौलुस के लिए जी उठना मुख्य बात है/ जैसे पौलुस ने कहा कि ये सच में पहला महत्व देने की बात है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब क्या जीजस सेमिनार के विद्वान् डॉ. हैबरमास की बात सुन रहे हैं, तो वो कैसे प्रतिउत्तर देंगे, इसके बारे में वो बताते हैं, तो सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: इस प्रोग्राम में हमने पौलुस के इस समयकाल के बारे में चर्चा की है, जो सन 57 से सन 30 तक जाती है, हमने इसे घटाकर 5 साल में लाया और मैंने कहा कि पौलुस सुसमाचार के बारे में कह रहा था, पतरस और याकूब के साथ, और फिर हमने सुसमाचार के छोटे भागों के बारे में देखा, प्रेरितों की कुछ परंपरा से, हम यही विचार सुसमाचार में भी देखते हैं, और मैं आपको बताऊ, यहाँ पर दोष निकालनेवाले क्या कह सकते हैं, हैबरमास सुसमाचार के अध्यन को मार रहे हैं, वो सोचते हैं क्योंकि सुसमाचार सोचता हैं कि यीशु ने कुछ कहा, तो उसने सच में कहा है, ईश्वरत्व के इस दावे में इससे मनघडत क्या हो सकता है, गीक को देखिए, रोमियों को देखिए/

जानते हैं इस प्रोग्राम में हमारा सवाल यही है कि हम कैसे विश्वास करें कि यीशु ने कहा, वो परमेश्वर का पुत्र है, और मनुष्य का पुत्र है, हम इसके और भी करीब आ रहे हैं, आप यीशु के बारे में आप इतना जान गए हैं कि निश्चय ही पौलुस ने यीशु के ईश्वरत्व की खोज नही की थी/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2017 ऋच्ड़क्ष्